‘‘मिथिलेश्वर और आनंद यादव की कहानियों में चित्रित नारी का तुलनात्मक अनुशीलन’’

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नान्देड (महाराष्ट्र) की पीएच्.डी. (हिंदी) उपाधि के पंजीकरण हेतु प्रस्तुत (शोध–प्रबंध) की रूपरेखा

शोध छात्र
श्री.श्रीकृष्ण रंगनाथ देवकर
एम्.ए.बी.एड्. एम्.फिल. सेट

शोध निर्देशक
डॉ. विजय भास्कर लावणे
एम्.ए.पीएच.डी.
अधिव्याख्याता, महात्मा गांधी महाविद्यालय,अहमदपुर ।

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,
नान्देड (महाराष्ट्र)

मार्च **2016**

'' मिथिलेश्वर और आनंद यादव की कहानियों में चित्रित नारी का तुलनात्मक अनुशीलन ''

शोध – प्रबंध की रूपरेखा

प्रस्तावना –

यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र, मुक्त विश्वविद्यालय से एम्.फिल. उपाधि प्राप्त करने के पश्चात मेरी दृष्टि संशोधन की ओर अत्यधिक उन्मुख हुई । तत्पश्चात मैंने तय किया कि स्वामी रामानंदतीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय से मिथिलेश्वर और आनंद यादव की कहानियों पर तुलनात्मक संशोधन किया जाय । तद्नुसार संशोधन की दिशा में मैं अग्रसर होता गया और इसी दिशा में प्रेरणा पाकर विषय चयन किया ।

भविष्य में इसी संशोधन का उपयोग तुलनात्मक कहानी साहित्यपर अनुसंधान करनेवाले शोध कर्ताओं को होगा ।

इस विषय पर अनेक संशोधन पध्दतियों का प्रयोग किया जाएगा विशेषत: वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठा पध्दति का उपयोग होगा ।

प्रेरणा एवं विषय चयन –

एम्.फिल का लघु शोध – प्रबंध यशवंतराव चव्हाण मुक्त विश्वविद्यालय में प्रस्तुत करने के पश्चात पीएच्.डी करने की जिज्ञासा मेरे मन में जागृत हुई । एक सशक्त विषय का चयन मेरे सामने की सबसे बड़ी चुनौति रही । गत चार – पॉच साल पढ़ता गया । इसी बीच ग्रामीण कहानीकार मिथिलेश्वरजी के 'तिरिया जनम,' 'बंद रास्तो के बीच' कहानी संग्रह पढ़ने का मौका मिला उनके कुछ और कहानी संग्रह आद्यंत पढ़ने के पश्चात मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ । इन कहानी संग्रहों में ग्रामीण नारी के जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है ।

गत साल उद्बोधन वर्ग के लिए, श्री. शिव – शाहू महाविदयालय, सरूड में जाने का मौका मिला । वहॉ आनंद यादवजी का व्याख्यान सुना । उनके व्याख्यान से मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ । आनंद यादवजी मराठी ग्रामीण अत्यधिक साहित्यकार के रूप में सर्वश्रुत है । मैंने उनके 'माळावरची मैना' और 'डवरणी' कहानी संग्रह पढ़े। जिसमें कागल तहसिल के इर्द – गीर्द के ग्रामीण नारी जीवन का चित्रण प्रस्तुत है । मेरी मातृभाषा मराठी होने की वजह से

इस विषय को लेकर मेरे मन में जिज्ञासा पनपने लगी कि, क्यों न इन दो दिग्गज ग्रामीण कहानियकारों का तुलनात्मक अध्यन किया जाय । प्रत्यक्ष रूप से यह जिज्ञासा

मैंने श्रद्धेय गुरूवर्य.डॉ. लावणे विजय भास्कर जी के पास प्रकट की । मेरी अध्यन की रूचि एवं पुर्वानुभव को दृष्टि में रखकर आपने मुझे मिथिलेश्वर और यादवजी का समग्र कहानी साहित्य पढ़ने का उपदेश दिया। उनके उपदेश का पालन कर मैं आद्यंत पढ़ता गया तत्पश्चात मिथिलेश्वर और यादव के अधिकतर कहानियों में ग्रामीण नारी का मार्मिक और यथार्थ चित्रण दृष्टिगोचर हुआ । अपना मंतव्य मैंने श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. लावणे विजय जी के पास किया । अत: विषयपर काफी विचार – विमर्श कर अंत: '' मिथिलेश्वर और आनंद यादव की कहानियों में चित्रित नारी का तुलनात्मक अनुशीलन'' इस शीर्षक को लेकर विषय निश्चित किया ।

शोध – प्रबंध का विषय और प्रयोजन –

स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी और मराठी कहानी को नई दिशा प्रदान करनेवाले कहानिकारों में क्रमश: मिथिलेश्वर और अनंद यादव का नाम अग्रगण्य है । ग्रामीण कहानी साहित्य को समृध्दता एवं संपन्नता प्रदान करने में लेखक द्वयी सिध्दहस्त है । ग्रामीण नारी जीवन इनके साहित्य का प्राण तत्व रहा हैं । ग्रामीण नारी जीवन के प्रति जिस दृष्टि को लेकर वे चले है और जिसे आधार बनाकर उन्होंने अपने कहानियों की रचना की है । इनकी यथार्थवादी दृष्टि नारी जीवन के अनेक पहलूओं को स्पर्श करती हैं ।

मिथिलेश्वर और यादव बहुआयामी, बहुमुखी प्रतिभा के धनी सर्जनकार है । नाटक आलोचना, निबंध, कहानियों आदि विधाओं को अपनी सृजनशीलता का आधार बनाया है । अपने साहित्यिक कृतियों के द्वारा दोनो ने ग्रामीण नारी जीवन के विभिन्न पक्षों को पूरी गंभीरता के साथ प्रस्तुत किया है । इनके साहित्य का मुख्य उद्देश्य रहा है, ग्रामीण नारी जीवन का यथार्थ चित्रण अंकित करना। अत: शोध – प्रबंध का मूल प्रयोजन भी ग्रामीण नारी है । प्रस्तुत प्रयोजन को केंद्र में रखकर ही''मिथिलेश्वर और अनंद यादव की कहानियों मे चित्रित नारी का तुलानात्मक अनुशीलन'' इस शोध – प्रबंध का मुख्य विषय रहा है ।

विषय का महत्व –

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिंदी और मराठी साहित्य में अनेक साहित्यकार साहित्य सृजन में अपना योगदान देते रहे । अपने देश और काल की परिस्थितीयों का चित्रण इनके साहित्य का केंद्रबिंदु रहा है । ऐसे साहित्यकार सामाजिक प्रतिबद्धता से जुड़े रहे और निरंतर साहित्य सेवा में लगे रहे किंतु मिथिलेश्वरऔर आनंद यादवजी के ग्रामीण नारी साहित्य को

तुलनात्मक दृष्टि से शोधकर्ताओं ने नजरअंदाज किया । अत: आलोच्य विषय मैंने शोधकार्य के लिए चुना है । मिथिलेश्वर और आनंद यादवजी पर शोधकार्य हुआ है किन्तु पीएच.डी की दृष्टि से दोनों के कहानियों में चित्रित ग्रामीण नारी का तुलनात्मक अनुशीलन इस विषय को दृष्टि में रखकर किसी भी शोधकार्ता ने शोध कार्य नहीं किया है । मेरा शोध–प्रबंध इस अभाव की पूर्ति का प्रयास ही कहना होगा ।

पूर्व अनुसंधान का पुनरावलोकन –

किसी भी विषय का अनुसंधान करते समय उस विषय के संदर्भ में हुआ पूर्व अनुसंधान को भी देखना जरूरी होता है प्रस्तुत लेखकों के संदर्भ में आज तक हुए अनुसंधान को देखने के बाद यह दिखाई देता है कि, अब तक कई शोधकर्ताओं ने उनके साहित्य पर अनुसंधान किया है जो निम्नांकित है ।

१. ‘‘हिंदी कहानी की ऑंचलिक धारा के संदर्भ में मिथिलेश्वर की कहानियोंका अनुशीलन ’’
२. ‘‘ आनंद यादव यांच्या वाड़मयाचा सर्वांगीण अभ्यास ’’
३. ‘‘आनंद यादव यांच्या चरित्रात्मक कादंबऱ्यांचा सामाजिक आणि वाड़मयीन अभ्यास’’
४. ‘‘ आनंद यादव यांच्या कथेतील सामाजिकता: मातीखालची माती व उखडलेली झाडे कथासंग्रहाच्या आधारे ’’
५. ‘‘ आनंद यादव यांच्या कथेतील समाजाचे आणि व्यक्तिमत्वाचे चित्रण ’’

शोध – प्रबंध की सीमा एवं व्याप्ति –

वस्तुत : शोध गहन अध्यन का विषय होता है, जिसमें परिश्रम के साथ सुनियोजन की भी आवश्यकता होती है । तात्पर्य, हर शोध विषय की अपनी सीमा और व्याप्तिहोती है। इसके सुचारू संतुलन से ही शोध कार्य सफलतापूर्वक संपन्न होता है । प्रस्तुत शोध – प्रबंध के अंतर्गत विवेच्य विषय का सूक्ष्मता से और सुचारू रूप से अध्ययन हो इसलिए सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत विषय का अध्ययन निम्नांकित आध्यायों में विभाजित किया गया है ।

प्रथम अध्याय –

'' मिथिलेश्वर और आनंद यादव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व ''

मिथिलेश्वरजी का व्यक्तित्व –

जन्म

माता – पिता

बाल्यकाल

प्रारंभिक शिक्षा

उच्च शिक्षा

विवाह

व्यवसाय

पारिवारीक परिचय

कृतित्व –

कहानी

उपन्यास

आलोचना

संपादन

पुरस्कार एवं सम्मान

आनंद यादवजी का व्यक्तित्व

जन्म

माता – पिता

बाल्यकाल

प्रारंभिक शिक्षा

उच्च शिक्षा

विवाह

व्यवसाय

पारिवारीक परिचय

कृतित्व

कहानी

उपन्यास

आलोचना संपादन

पुरस्कार एवं सम्मान

तुलनात्मक अनुशीलन

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय –

''मिथिलेश्वर और आनंद यादव की कहानियों का क्रमागत विवेचन, कहानियों का विभाजन''

भूमिका

मिथिलेश्वर जी का कहानी साहित्य

बाबूजी

बंद रास्तों के बीच

दूसरा महाभारत

मेघना का निर्णय

तिरिया जनम

हरिहर काका

एक में अनेक

एक थे प्रो.बी. लाल

भोर होने से पहले

उस रात की बात

आनंद यादवजी का कहानी साहित्य

खळाळ

घर जावई

माळावरची मैना

आदिताल

डवरणी

उखडलेली झाडे

तुलनात्मक अनुशीलन

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय
‘‘ नारी जीवन : अर्थ, परिभाषा और स्वरूप ’’
भूमिका
अर्थ
परिभाषा
स्वरूप
आलोच्य कहानी साहित्य में नारी – जीवन की विशेषताएँ
आलोच्य कहानी साहित्य में नारी – जीवन की स्थिति
तुलनात्मक अनुशीलन
निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय –
‘‘ मिथिलेश्वर और आनंद यादव जी के कहानी साहित्य में चित्रित नारी – जीवन: सामाजिक संदर्भ ’’
भूमिका
ग्रामीण नारी जीवन में वर्ण व्यवस्था का परंपरागत एवं परिवर्तित स्वरूप
जाति व्यवस्था का परंपरागत स्वरूप एवं परिवर्तन
अभावग्रस्त नारी – जीवन और यथार्थ
प्राकृतिक प्रकोप
मूल्यहीनता
सामाजिक शोषण
पारिवारीक व्यवस्था का परंपरागत एवं परिवर्तित स्वरूप
पारिवारीक रिश्ते – नाते
ग्रामीण समाज में नारी संबंधी विविध धारणाएँ
नारी की परिवर्तित स्थिति
नारी और विवाह संबंध
ग्रामीण नारी और शिक्षा
तुलनात्मक अनुशीलन
निष्कर्ष

पंचम अध्याय –

‘‘ मिथिलेश्वर और आनंद यादव जी के कहानी साहित्य में चित्रित नारी – जीवन:आर्थिक संदर्भ ’’

आर्थिक संदर्भ –

भूमिका

नारी जीवन की आर्थिक दुर्दशा तथा उसके कारण आर्थिक विषमता के आधार पर समाज के विभिन्नवर्ग – संघर्ष और उसकी चेतना

तुलनात्मक अनुशीलन

निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय –

‘‘ मिथिलेश्वर और आनंद यादव जी के कहानी साहित्य में चित्रित नारी – जीवन : धार्मिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ ’’

अ.धार्मिक संदर्भ –

भूमिका

धर्म एवं सांप्रदायिकता में नारी

धर्म और जाति – संप्रदाय में नारी

पाखंडी साधु एवं महंतो के विलासी जीवन में नारी

मठों एवं तीर्थस्थानों के जीवन में नारी

ग्रामीण धार्मिक जीवन में नारी और विविध अंधविश्वास

आ. सांस्कृतिक संदर्भ –

भूमिका

सांस्कृतिक स्वरूप

ग्रामीण संस्कृति के नियामक तत्व और नारी

ग्रामीण संस्कृति के सांस्कृतिक मूल्य और नारी

परंपरागत एवं परिवर्तित स्वरूप और नारी

ग्रामीण कृषि संस्कृति नारी संदर्भ

तुलनात्मक अनुशीलन

निष्कर्ष

सप्तम अध्याय –

‘‘मिथिलेश्वर और आनंद यादव जी के कहानी साहित्य में चित्रित नारी–जीवन: की समस्यांएँ’’

भूमि की समस्या
बेरोजगारी की समस्या
गरीबी की समस्या
भूख की समस्या
शिक्षा की समस्या
शोषण की समस्या
नैतिक मूल्यों के विघटन की समस्या
शहरीकरण की समस्या
बाल – विवाह की समस्या
कामकाजी नारी की समस्या
जातियता की समस्या
आतंक की समस्या
हिंसा की समस्या
बाढ़ की समस्या
अकाल की समस्या
बालहत्या की समस्या
दहेज की समस्या
अस्पृश्यता की समस्या
निरक्षरता की समस्या
उत्तराधिकारी की समस्या
कर्ज की समस्या
बलात्कार की समस्या
तुलनात्मक अनुशीलन
निष्कर्ष

उपसंहार

समग्र अध्यायों के विवेचन के उपरांत जो निष्कर्ष प्राप्त होंगे वे सार रूप में दिए जाएँगे ये निष्कर्ष प्राप्त तथ्यों के आधार पर वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ पध्दति से निकाले जाएँगे।
(आलोच्य विषय पर प्रत्यक्ष रूप में अनुसंधान करते समय प्रस्तुत रूपरेखा में परिवर्तन होने की संभावना है।)

परिशिष्ट

आधार ग्रंथ – सूची

संदर्भ ग्रंथ – सूची

शोध –छात्र

(श्री.श्रीकृष्ण रंगनाथ देवकर)

शोध – निर्देशक

(डॉ. विजय भास्कर लावणे)

स्थान – नान्देड

तिथि –

आधार – ग्रंथ सूची

अ.नं	कहानी संग्रह	प्रकाशन	संस्करण
मिथिलेश्वर जी का कहानी साहित्य			
1	बाबूजी	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली	नया 1988
2	बंद रास्तों के बीच	इंद्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली	
3	दूसरा महाभारत	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली	दू. 1992
4	मेघना का निर्णय	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली	नया 1988
5	तिरिया जनम	किताब घर नई दिल्ली	नया 1993
6	हरिहर काका	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली	प्र. 1983
7	एक में अनेक	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली	प्र. 1987
8	एक थे प्रो.बी.लाल	किताब घर नई दिल्ली	प्र. 1993
9	भोर होने से पहले	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली	प्र. 1994
10	उस रात की बात		
आनंद यादवजी का कहानी साहित्य			
1	खळाळ	मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे	1984
2	घर जावई	मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे	1987
3	माळावरची मैना	मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे	1987
4	आदिताल	मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे	1980
5	डवरणी	मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे	1982
6	उखडलेली झाडे	मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे	1986
संदर्भ ग्रंथ सूची			
1	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य	डॉ. विवेकी राय	
2	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य और ग्राम– जीवन	डॉ. विवेकी राय	
3	बाहर और भीतर की दुनिया	डॉ. प्रभा खेतान	
4	श्रेष्ठ ऑचलिक कहानियॉ	स. राजेंद्र अवस्थी	
5	हाथ का जप्त	रेणु द्वारा संपादित	

Filename:	Ph.D. Synopsis of Deokar S
Directory:	C:\Users\admin\Desktop
Template:	C:\Users\admin\AppData\Roaming\Microsoft\Templates\Normal.dotm
Title:	
Subject:	
Author:	sai
Keywords:	
Comments:	
Creation Date:	28-Nov-16 9:12:00 AM
Change Number:	2
Last Saved On:	28-Nov-16 9:12:00 AM
Last Saved By:	admin
Total Editing Time:	6 Minutes
Last Printed On:	28-Nov-16 9:13:00 AM

As of Last Complete Printing

Number of Pages: 11

Number of Words: 1,585 (approx.)

Number of Characters: 9,040 (approx.)